© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 3 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Edication

सन्त कवियों की दृष्टि में नारी

डॉ अनीता सिंह
पूर्व शोधच्छात्रा, हिन्दी विभाग, श्री गांधी पी.जी. कालेज, मालटारी, आजमगढ़,उत्तर प्रदेश।

प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा ठीक थी किंतु मध्यकाल में आते आते उनकी दशा अत्यंत खराब हो गई। नारी के संदर्भ में संतो की दृष्टि अपेक्षाकृत उदार थी। अनेक कुप्रथाओं के कारण उनके विकास में स्थिरता से आ गई थी। इन संतो ने समाज में व्याप्त इन कुप्रथाओं को तोड़ने का प्रयास कर उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थिति दिलाने की प्रयत्न किए। सर्वप्रथम रामानंद ने स्त्री पुरुष में विभेद न करके शिष्यत्व प्रदान किया। स्त्रियों को अपने संघ में स्थान देकर रामानंद समाज सुधार के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण किए उनकी दो शिष्याएं थीं– विद्यावती और सुरसरी।[1]

निर्गुण शाखा के संत कबीरदास स्त्रियों के संदर्भ में समान विचार रखते हैं अर्थात् वे स्त्रियों को सदैव असद सद दोनों दृष्टियों में देखते हैं। उन्होंने समाज को यह बताने का यह प्रयत्न किया है कि पत्नी का द्वारा पति के साथ, मां का बेटे के साथ और बहन का भाई के साथ किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिए।[2] समाज के सभी सम्बन्ध विश्वास पर चलते हैं । जहां विश्वास नहीं रहता वहां संबंधित बिगड़ जाते हैं । इसलिए पतिव्रता नारी की कबीर ने भूरि भूरी प्रशंसा की है।[3] पतिव्रता नारी को कोई पुरुष तथा समाज दुःख दे नहीं सकता है । उन्हें सभी स्त्रियों जैसे माता ,बहन, बेटी चाहे जो हो यदि वे चरित्रहीन है तो निश्चित रूप से वह निन्द के पात्र हैं, क्योंकि ऐसी स्त्रियों से समाज पतनोन्मुख हो जाता है । सामान्यतया जन–जीवन में नारी को वासना तथा सुंदरता का प्रतीक समझा जाता है।[4] कबीर हमें इस वासनामय रूप से दूर जाकर भगवान् में लीन रहकर जीवन यापन करने की प्रेरणा देते हैं । उनका मंतव्य है कि समाज के बंधन में पड़कर मनुष्य जहां का तहां रह जाता है । इसलिए मनुष्य को इस वासना का परित्याग कर हरि का शरण लेना चाहिए ,क्योंकि हरि ही है जो परम गति को प्रधान करने वाले हैं।[5]

गुरु नानक की दृष्टि में स्त्रियों की दशा अन्य प्रकार का रहा है। हिंदू जाति में उपेक्षित नारियों को गौरव प्रधान करने का एक सफल प्रयत्न किया है । नानक का मानना है कि स्त्री ही हमें गर्भ में धारण करती है और उसी से हम जन्मना इस संसार में आते हैं । उसी से हमारी जीवन पर्यंत मैत्री है। उसी से सृष्टिकर्म चलता है स्त्री को मंद क्यों कहे ? जिससे महापुरुष जन्म लेता है अर्थात् स्त्रियां है महान् पुरुषों के जन्मदात्री होती है। इसलिए किसी भी दृष्टि से स्त्रियों को हीन भाव से नहीं देखना चाहिए।[6]

नानक ने स्त्रियों को ईश्वर की आराधना तथा पति के प्रति प्रेम भक्ति भावना पर बल दिया था । उन्होंने बताया कि गुणवती स्त्रियों में एक प्रकाश रहता है। एक सुशील स्त्री का गुण उसके शरीर को सुसज्जित करना नहीं बल्कि उसके पति के प्रति स्नेह तथा प्रेम को प्रदर्शित करना है ।ऐसी स्त्रियों के गुणों की प्रशंसा करते हुए नानक ने उन स्त्रियों की कटु आलोचना की है। जो धन के लालच में अपने सतीत्व को बेच देती है।[7] वल्लभाचार्य का स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत भिन्न रहा है। वह वैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप स्त्रियों को समाज में व्यवस्थित करना चाहते थे। धार्मिक जीवन में उनका स्थान पुरुषों के बराबर था । आराधना तथा यज्ञ में भी अपने पति के साथ हैं अर्थात् भाग ले सकती थीं। स्त्रियों को वेद अध्ययन तथा उपनयन धारण करने की अनुमति स्वीकार करते हैं । वल्लभाचार्य की दृष्टि में स्त्री पुरुष में कोई भेद नहीं है क्योंकि उनकी आत्मा समान है । गुणवती स्त्रियों के माध्यम से पुरुषों में भक्ति भावना का विकास संभव है। वेश्याओं के प्रति भी वल्लभाचार्य की सहानुभूति थी। जो भक्ति भावना को अपनाना चाहती थी। वह प्रेम विवाह में जाति बंधन को न मानने

वाले थे, इसीलिए वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र विट्ठलेश ने अंतरजातीय विवाह किया।[8] उनकी दृष्टि में समाज में जात पात का कोई आधार नहीं है पुरुष को स्त्री का रूप गुण आदि देख कर ही उसके साथ विवाह आदि संस्कार करना चाहिए।

भक्ति कालीन कवियों में तुलसीदास का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है और उनका ग्रंथ रामचरितमानस भी अत्यंत गौरवशाली ग्रंथ रत्न के रूप में प्रसिद्ध है । तुलसीदास ने रामचरितमानस में नारी के अनेक रूपों का चित्रण किया है । मानव जीवन में नारी का योगदान असंदिग्ध रूप में है । उनके बिना ना तो सृष्टि संभव है और ना उसका संचालन। तुलसीदास के अनुसार नारी के बिना मानव जीवन अत्यंत नीरस हो जाता है। वह अपने ग्रंथ रामचरितमानस में नारी की आदिशक्ति की अभिव्यक्ति मातृशक्ति के रूप में की है । नारी के विभिन्न रूपों में भी हम उनका चित्रण पाते हैं। जैसे विद्या,अविद्या सुमति,कुमति ,तृष्णा ,वासना आदि। तुलसीदास में जहां नारी सीता के प्रति अपार श्रद्धा दिखलाई है, वहीं कहीं कहीं उन्होंने नारी जाति की कटु आलोचना भी की है । गृहणी के रूप में सीता का परिचय चित्रकूट में दिखलाई पड़ता है। जहां वे अपनी तीनों सासो – कौशल्या कैकेयी और सुमित्रा – की सेवा से प्रसन्न कर लेती है। अपने पति श्रीराम के सम्मुख तो सीता सदैव विनम्र दासी के रूप में नतमस्तक हुए दिखलाई पड़ती है। पति पत्नी का संबंध अत्यंत गरिमामय होती है । उसके कर्तव्यों की दिव्यता और उसके कारण लोक–जीवन की कठिनमाला की सफलता हमें अयोध्या कांड में दृष्टिगत होती है । राम वन गमन के अवसर पर सीता द्वारा प्रभु से कहे गए वचनों का एक–एक शब्द सती के पवित्र प्रेम और पवित्र कर्तव्यों के आदर्श का द्योतक है सीता के करुण विलाप के मूल में सतीत्व का वह बल छिपा हुआ है जो भारतीय नारी के गौरव और गर्व का विषय है। जिसके बल पर वह सीता अग्नि की लपटों को भी प्रेम से आलिंगन कर लेती हैं। तुलसीदास ने सीता जी का सद् उक्तियों से उसकी अभिव्यक्ति की है कि जैसे शरीर छाया को छोड़कर कहीं नहीं जा सकती , उसी प्रकार पत्नी पति को छोड़कर नहीं रह सकती।[9]

जायसी ने पद्मावत में नागमती के माध्यम से पत्नी के प्रति पति के प्रेम की अभिव्यक्ति भली प्रकार से की है । उनकी दृष्टि में पुत्र से केवल एक कुटुंब की प्रतिष्ठा बढ़ती है[10] परंतु पुत्री दोनों कुलों का नाम उजागर करती हैं ।उसकी कीर्ति से पिता का हृदय किस गर्व मिश्रित आनंद का अनुभव करता है , उसे तुलसीदास ने चित्रकूट में जनक के मुख से कहलवा कर प्रदर्शित किया है । उनका कहना है कि जो व्यक्ति परस्त्री को मातृत्व समझते हैं ,वह धन्य है, उनका जीवन धन्य है । जो मनुष्य अपना कल्याण उज्ज्वल यश ,सद्गति ,शुभ गति , सद्बुद्धि तथा सब प्रकार के सुख चाहता हो, उसे चाहिए कि वह चतुर्थी के चंद्रमा के समान पराई स्त्री का सुख त्याग दे। तुलसीदास की दृष्टि में अनुज बधू ,भगिनी, सुता, नारी तथा कन्या के ऊपर दृष्टिपात करने वाला महान् पातकी होता है।[11]

तुलसीदास ने सती नारियों को जहां एक तरफ अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा है वही कुलटा नारियों के प्रति उनकी भावना अत्यंत अलग है **–ढोल गवार शूद्र पशु नारी।सकल ताडना के अधिकारी ।।**[12] तुलसीदास का कहना है कि अब माया तो स्वभाव से ही निर्बल और जड़ जाति की होती है। बड़े बड़े ज्ञानी भी स्त्री का मुख देखते ही सारे सुध बुध खो बैठते हैं । स्त्री जाति की कटु आलोचना करते हुए तुलसीदास ने कहा है कि मुंह के विराम के लिए तो स्त्री साक्षात् वसंत ऋतु के समान है। यूं तो काम क्रोध मद और लोभ आदि सब मोह अज्ञान की ही प्रबल सेना वाले हैं , पर उनमें स्त्री तो और भी दारुण दुख देने वाली है , जिसे माया का ही दूसरा रूप समझना चाहिए । जहां स्त्रियां होती हैं, वहां वह वासनाएं अवश्य ही अपने आप उत्पन्न हो जाती हैं। जहां स्त्रियां होती है वहां धर्म के काम होने में रुकावट होती है । विवाह को बढ़ाने वाली और बल, बुद्धि, शील तथा सत्य को अस्थिर करने वाली है।[13] इस प्रकार स्त्री सारे अवगुणों की जड़ है, अतः तुलसीदास की दृष्टि में ऐसी स्त्रियों से बचना चाहिए, जिससे कि मनुष्य पतन की राह से बच सके।

सती प्रथा का प्रचलन भारतवर्ष में अत्यंत प्राचीन काल से चलता आ रहा था। महाकवि बाणभट्ट विरचित हर्षचरित में महाराजा हर्षवर्धन की माता के सती होने का वर्णन मिलता है। विदेशी यात्री निकोलस ने सती प्रथा का आंखों देखा वर्णन करते हुए लिखा है कि सती प्रथा इस युग में प्रायः समस्त भारतवर्ष में प्रचलित थी । मुस्लिम इतिहासकार अलबरूनी तथा विदेशी यात्री इब्नबतूता ने भी

सती प्रथा का उल्लेख किया है। अमीर खुसरो लिखता है कि हिंदू स्त्री अपने पति के लिए अपने आप को आग में जला देती थी।[14] इब्नबतूता ने सती प्रथा के विषय में विस्तृत रूप में लिखा है । भक्त कवियों में इस प्रथा का उल्लेख मलिक मोहम्मद जायसी जी ने अपने काव्य पद्मावत में उल्लेख किया है । राजा रतन सिंह की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नियां नागमती तथा पद्मावती आग में जल मरती हैं । पद्मावती तथा नागमती दोनों रानियां शृंगार करके पति की अर्थी पर बैठ जाती है तथा ढोल बाजे के साथ जाती है और पति की चिता के साथ स्वयं जल मरती हैं । कबीरदास ने भी सती प्रथा का उल्लेख अपने काव्य में किया है । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि संत कवि भी सती प्रथा से अपने मुख को मोड़ नहीं पाए थें।[15]

भारतीय समाज में मध्यकाल में विशेषता सती प्रथा की भांति जौहर प्रथा भी प्रचलन में थी, किंतु यह प्रथा मुख्य रूप से राजपूत घराने में ही थी । पति को युद्ध में हताहत होने की सूचना पाते ही सभी पत्नियां जौहर कर लेती थी, या मृत्यु के भय से राजपूत स्वयं युद्धक्षेत्र में उतरने से पूर्व अपनी स्त्रियों को जौहर कर देने पर मजबूर करते थे । जिससे उनके सतीत्व की रक्षा हो सके । जब सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर आक्रमण किया तो तत्कालीन चौहान वंश के शासक ने अपनी स्त्रियों को अग्नि के अधीन कर दिया सुल्तान मोहम्मद तुगलक के शासन काल में काम्पिल्य के राजा पर आक्रमण हुआ तो वहां की स्त्रियों ने भी जौहर किया। जायसी ने अपने काव्य पद्मावत में जौहर प्रथा का भी उल्लेख किया है।[16] इस प्रकार संत कवियों के कार्यों के अध्ययन करने से तत्कालीन समय में नारियों में विद्यमान इस जौहर प्रथा का भी ज्ञान होता है।

मध्यकाल में भारतवर्ष में मुसलमानों का आगमन हो चुका था मुस्लिम शासक जिसे सुल्तान कहा जाता था और उसके राज दरबार में रहने वाले अमीर लोग अत्यंत विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थें। इस समय तक दास दासियों के रखने की प्रथा अति प्रचलित हो गई थी । 12 वीं सदी से लेकर 14 वीं शताब्दी तक दासों की संख्या में बराबर वृद्धि होती रही। सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय दासों की संख्या 50000 तक पहुंच गई थी अलाउद्दीन के समय दिल्ली दासों का मुख्य बाजार था । इस प्रथा के परिणाम स्वरूप अमीर लोग अधिक संख्या में दास खरीदते थे । कबीरदास कहते हैं कि जासु का सेवक तासु को पाई अर्थात् सेवक की भलाई अपने मालिक के पास रहने में ही है। तुलसीदास ने भी इसका समर्थन किया है । उनके अनुसार सेवक को स्वामी की सेवा करनी चाहिए , उसे अपने सुखों की चिंता नहीं करनी चाहिए सेवावृत्ति के दक्षता के कारण ही प्रिय हो सकते हैं।[17]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मध्यकाल में जब भारत वर्ष में भक्ति आंदोलन का समय चल रहा था उस समय संत कवियों ने न केवल भक्ति भावना की ओर ही अपना ध्यान केंद्रित किए अपितु तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों की ओर भी वे अपनी पैनी नजर को बनाए रखें। इसी संदर्भ मे इन कवियों ने तत्कालीन समाज में विद्यमान नारियों की स्थिति के विषय में भी अपने ग्रंथ में प्रतिपादित किया। तत्कालीन समय की नारियों की दशा बहुत अच्छी नहीं थी। जहां एक तरफ उनमें सती तो आदि विद्यमान था, वहीं दूसरी तरफ उस समय के राजसी वातावरण के कारण उन्हें विभिन्न प्रकार के दंगों को भोगना भी पढ़ता था, जिसमें सती प्रथा जब हर प्रथा आदि मुख्य रूप से रहा है । जो कि न चाहते हुए भी स्त्रियों को इस प्रथा का अनुपालन करना ही पड़ता था ,नहीं तो समाज में उनकी बड़ी ही दुर्दशा होती थी । इसी कारण वह अपनी इस प्रथा में सद्गति मानती थी, अतः उसका अनुकरण करती थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृ0 49
2. कबीर ग्रंथावली पद, 111 पृ0 72
3. वहीं पद, 139 पृ0 100
4. वही पद, 11 पृ0 40
5. गुरु ग्रंथ साहब महला 1 पृ0 773

6. ए रशीद सोसाइटी एंड कल्चर इन मेडिवल इंडिया पृ0 254
7. जे एस शाह श्रीमद् वल्लभाचार्य हिज फिलासफी एंड रिलीजन पृ0 273
8. वही पृ0 275
9. रामचरितमानस, अयोध्या काण्ड 64,6.7
10. वही, अयोध्या काण्ड दो 97 चौ 5–9
11. वही सुन्दर काण्ड 38,3
12. वही अरण्यकाण्ड 9,7–8
13. वही 43
14. वही 44,3
15. निकोलीकोन्तीः ट्रैवेल्स ऑफ निकोली कोंटी सिंगर इंडिया इन द 15जी सेंचुरी अध्याय 2,पृ.23–24
16. जायसी ग्रंथावली, सं. रामचंद्र शुक्ल दो–2,3
17. कवितावली,छन्द 23